पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (प्रातः), दिल्ली विश्वविद्यालय

एवं

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

तथा

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक 22 फरवरी 2023

तोमर एवं चौहान राजवंश के अन्तर्गत गौरवशाली दिल्ली

दिल्ली की स्थापना तोमर राजवंश के द्वारा किया गया था। तोमर या तंवर अर्जुन के पुत्र परीक्षित के वंशज हैं जो इंद्रप्रस्थ के राजा थे। गत 1000 वर्षों में दिल्ली अमरपुरी बन गई है। कितने झंझावात कितने दावानल को दिल्ली और उसकी प्राण दायिनी यमुना ने झेले हैं एवं अनेक राजवंशों के उत्थान पतन को इस नगर ने देखा है। युद्धोपरांत खून की नदियां बही और यमुना में मिली है। कितनी बार दिल्ली उजड़ी त्यागी गई और पुनः बसाई गई, किंतु आज भी यह एशिया की सबसे वैभवशाली नगरी है। आधुनिक दिल्ली 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश नगर योजनाकार और वास्तुकार लुटियंस के द्वारा बसाई गई है, जो आज कुबेर की अलकापुरी और नर नारियों के लिए कामनापुरी बन गई है। पश्चिमोत्तर और पूर्वी भारत के मध्य दरवाजे की तरह है दिल्ली। आज भारत में कहावत है "ऑल रोड्स लीड टू दिल्ली"। इस नगर का प्रारंभिक नाम इंद्रप्रस्थ था जो महाजनपद काल में कुरु जनपद की राजधानी थी। बाद में इसका नाम योगिनीपुर हो गया। मौर्य काल में फिरोजशाह कोटला, जो आज का श्रीनिवासपुरी है, में अशोक का स्तंभ प्राप्त हुआ था। बाद में यह क्षेत्र जोधपुर के गुर्जर प्रतिहार राजाओं के अधीन आ गया किंतु 10वीं–11वीं शताब्दी से तोमरों ने इस '**ढिलिका**' को, जो आगे चलकर दिल्ली बनी अपनी सत्ता का केंद्र बना लिया और

अनंगपाल तोमर ने लालकोट को अपने शासन का केंद्र बनाया। तोमर राजाओं ने लगभग 2 शताब्दियों तक आज के कुतुब मीनार के आसपास अपने स्थापत्य का निर्माण किया था। अनंगपाल ने कुतुबमीनार के पास अपनी दोहती (नातिन) के लिए तारों को निरीक्षण करने के लिए विशाल टावर बनवाए थे। इस वंश के प्रतापी राजाओं में तेजपाल, मदनपाल, पृथ्वीपाल, चाहडपाल और अनंगपाल प्रथम द्वितीय और तृतीय हुए। पृथ्वीपाल और अनंगपाल राजा बहुत योग्य और भवन निर्माता थे। तोमर राजा महिपाल ने आज के दिल्ली के महिपालपुर को बसाया था। फरीदाबाद का सूरजकुंड सरोवर को सूरजपाल तोमर ने निर्मित कराया था। अनंगपुर बांध और पालम तोमरो के बनाए हुए हैं। इनका संघर्ष प्रारंभ में तुर्कों से और बाद में बढ़ती हुई चौहान सत्ता से हुआ। तोमरो का पराभव चौहानों ने किया और इनके वंश का खात्मा कुतुबुद्दीन ऐबक ने किया। इनकी दो राजधानियां थी हांसी और दिल्लीका अर्थात दिल्ली। तोमर राजाओं ने महरौली गांव के आसपास कई बड़े निर्माण किए थे और इस क्षेत्र को प्रभावशाली बनाया था। तुर्की के प्रारंभिक आक्रमण को जयपाल ने अलवर के नारायणपुर में विफल किया और उसके सामर्थ्य से महमूद गजनवी को लौटना पड़ा था। तोमर राज्य में थानेश्वर, मथुरा, भरतपुर, अलवर, हस्तिनापुर, बुलंदशहर और कोलार (अलीगढ़) के क्षेत्र सम्मिलित थे।

महमूद गजनवी ने मौखरियों को थानेश्वर में लूटा परंतु तोमरो के डर से वह उसे पूर्णता में जीत नहीं सका। महमूद गजनवी तोमर राजाओं के डर से दिल्ली पर कभी सीधा आक्रमण नहीं किया। आगे कुमारपाल तोमर ने परमार भोज कलचुरी कर्ण और नाडोल के अण्णिल चौहान की संयुक्त सेना बनाकर तुर्कों को दिल्ली से पंजाब के नगरकोट तक खदेड़ दिया, लाहौर को भी हिंदू सेना ने तुर्कों से मुक्त करा लिया। अनंगपाल द्वितीय ने महरौली में 27 महल और मंदिर बनवाए थे इसमें एक प्रसिद्ध जैन मंदिर भी था जिसकी पुष्टि कुतुबमीनार से प्राप्त फारसी अभिलेख से होती है। 12 वीं शताब्दी के मध्य से दिल्ली के चौहानों के अधीन दिल्ली आ गई। पृथ्वीराज चौहान तृतीय जो कि अनंगपाल तृतीय के नवासे थे, रायपिथौरा कहे गए हैं। आगे के 40 वर्षों तक चौहानों ने पश्चिम उत्तर भारत को यवन विहीन कर दिया। किंतु दिल्ली के तोमर वंश के इतिहास पर कम अध्ययन हुआ है। इसके अतिरिक्त दिल्ली से अजमेर, हाँसी, थानेसर के क्षेत्रों पर आधिपत्य के लिए तोमरों चौहानों में शताब्दियों तक युद्ध होता रहा। सिन्धु नदी और खैबर के उस पार तुर्क मजबूत हो रहे थे और इधर चौहान–तोमर–गहड़वाल आपस में लड़कर कमजोर हो रहे थे तथा भारत की सुरक्षा खतरे में पड रही थी। पृथ्वीराज तोमर के साम्राज्य को शाकम्भरी के कैमासदी और पृथ्वीराज तृतीय की माँ कर्पूर देवी द्वारा विघटित करना विनाशक सिद्ध हुआ। चौहानों और तोमरों की संगठित

शक्ति शहाबुद्दीन गौरी को भारत में सफल नहीं होने देती और तब भारत का इतिहास कुछ और होता। इन्ही ऐतिहासिक स्थितियों का अध्ययन–मनन पर इस एक दिवसीय संगोष्ठी में हो सकेगा।

तबकाते नासिरी के अनुसार चाहड़पाल तोमर और राय पिथौरा (पृथ्वी राज तृतीय) ने तराइन के पास शहाबुद्दीन गोरी को रोक लिया। गोविन्द राय (चाहड़पाल) पर गोरी ने भाला उसके मुंह पर फेंका, भाला मुंह में घुस गया और गोविन्द राय के दो दांत टूट गये पर गोविन्द राय, जो कि नर–नाहर था, प्रत्याक्रमण किया और गोरी पर तलवार का भरपूर वार किया। गोरी घायल होकर घोड़े पर लुढक गया, और घोड़ा भागने लगा, सेना भी भाग गई। किसी खिल्जी सैनिक ने उसकी प्राण रक्षा की। किन्तु **सद्गुण विकृति** के कारण रायपिथौरा ने उसे पकड़ा नहीं जाने दिया। अगर पकड़ के उसका वध कर दिया गया होता तो, मुहम्मद गोरी भारत पर तुर्की शासन स्थापित नहीं किया होता– ये सब विचारणीय बिंदु इस संगोष्ठी में रहेंगे।

तराइन का दूसरा युद्ध होली के दिन 1 मार्च, 1192 फाल्गुनी पूर्णिमा वि.स. 1249 को ब्रह्ममुहूर्त में हुआ। दिल्ली का अंतिम तोमर राजा चाहडपाल (गोविन्द राय) भारत की स्वतंत्रता की रक्षा करता हुआ बलिदान हुआ और पृथ्वीराज का भी अंत हो गया। इस अंतिम युद्ध की कुछ बातें हैं जो सबक के रुप में स्मरण योग्य है, जिनकी चर्चा करना यहॉ आवश्यक है और सतर्क रहना भी जरुरी है। हम दिल्ली के तोमर एवं चौहान वंश के इतिहास पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रस्ताव करते हैं।

विचारणीय बिन्दु

1. भारत पर तुर्की आक्रमणों का प्रारंभ।
2. बप्पा रावल और नागभट्ट द्वितीय द्वारा तुर्कों की पराजय।
3. चालुक्यरानी नायकी देवी द्वारा मोहम्मद गौरी की पराजय।
4. 7वी–12वीं शताब्दी के भारतीय प्रतिरोध के भारतीय नायक।
5. तोमर राज्य का उत्थान और इसके नायक राज्य।
6. चौहान वंश के नरेश और तुर्की आक्रमणों का प्रतिरोध।
7. ताराईन के युद्ध।
8. तोमर एवं चौहानों के अंतर्गत दिल्ली का स्थापत्य।
9. तोमर एवं चौहानों के अंतर्गत दिल्ली की समाज, संस्कृति एवं कला।
10. साहित्य में तोमर एवं चौहान राजवंश।

शोध-पत्र

गोष्ठी में प्रतिभाग करने वाले विद्वान् शोधार्थियों से यह अपेक्षित है कि वे उपर्युक्त विषय के किसी एक पक्ष पर अपना शोध–पत्र प्रेषित करें। शोध–पत्र का शीर्षक, मुख्य प्रतिपाद्य शोध प्रविधि एवं निष्कर्ष स्पष्टतः उल्लिखित होना चाहिए। पूर्ण शोध–पत्र अधिकतम 5000 शब्दों में व शोध–सारांश अधिकतम 500 शब्दों में हिन्दी व संस्कृत हेतु क्रुतिदेव 010 फॉन्ट के आकार 14 तथा अंग्रेजी हेतु टाइम्स न्यू रोमन फॉन्ट के आकार 12 में ई मेल द्वारा **abisy.lecture@gmail.com, shatrujeet.singh@pgdav.du.ac.in** पर प्रेषित किया जाना श्रेयस्कर होगा।

पंजीकरण शुल्क : 500

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ:

शोध सारांश प्रेषित करने हेतु अंतिम तिथि – 15 फरवरी 2023

पूर्ण शोध–पत्र प्रेषित करने हेतु अंतिम तिथि – 20 फरवरी 2023

संयोजकः **डॉ. शत्रुजीत सिंह**
(सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नयी दिल्ली)
मो. 8382803631

सह-संयोजकः **डॉ. शब्द प्रकाश**
(सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नयी दिल्ली)
मो. 9311222789

आयोजन समिति

- डॉ. सर्बानी कुमार
- डॉ. सुनिल कुमार
- डॉ. विशाल चौहान
- डॉ. अवधेश कुमार झा
- डॉ. चन्द्र पाल सिंह
- डॉ. कुन्दन कुमार
- डॉ. रिमझिम शर्मा
- डॉ. सुरेश कुमार मीणा
- डॉ. अंकित अग्रवाल